P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-IV* ISSUE-IV*December-2016
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

महाकवि कालिदास के रघुवंश में इतिहास परम्परा

सान्त्वना द्विवेदी
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
संस्कृत विभाग,
डी0 ए0 वी0 पी0जी0 कालेज,
लखनऊ विश्वविद्यालय,
लखनऊ

सारांश

इस प्रकार से रघुवंशम् एवं अन्य काव्यों एवं महानाटकों में महाकवि कालिदास के विद्वत्ता एवं कवित्व शक्ति के साथ–साथ समृद्धि इतिहास की भी झलक मिलती है जो कथानक को सुव्यवस्थित शैली से आगे बढ़ाती है और तात्कालिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पक्ष का पूर्ण ज्ञान भी देती है।

मुख्य शब्द : रघुवंश, सर्ग, इतिहास, कालिदास, महाकाव्य और राज्य।

प्रस्तावना

महाकवि कालिदास के महाकाव्यों में हमें रसानुभूति ही नहीं अपितु विशद गौरवशाली भारत की विराट इतिहास परम्परा का भी ज्ञान होता है। इन महाकाव्यों में ऐतिहासिक तथ्य एवं घटनाएं एवं एक वंश के अनेक व्यक्तियों के वृत्त के वर्णन से तात्कालिक इतिहास का पर्याप्त ज्ञान प्राप्त होता है।

'रघुवंश' में अनेक प्राचीन विकसित साम्राज्यों एवं समृद्ध नगरों का वर्णन किया गया है। कालिदास ने अपने समय में सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक तथा व्यापार सम्बन्धी स्थिति का प्रामाणिक एवं सजीव चित्रण किया है। तत्कालीन उत्तर भारत के अनेक ऐसे स्वतंत्र राज्य समूहों का वर्णन कालिदास ने किया है, जिनके चारों ओर के राज्य विदेशी आक्रान्ताओं से घिरे थे। कालिदास का यह वर्णन अशोक के विभिन्न अभिलेखों से काफी मिलता–जुलता है। इन अभिलेखों से ज्ञात होता है कि अशोक का विशाल साम्राज्य ऐसे विभिन्न प्रकार के राज्यों से घिरा था जो उसके मित्र–राज्य थे तथा उनके परामर्श से अशोक ने उन–उन राज्यों में अपने धर्मप्रचारक बौद्ध राजदूत भेजे थे। 'रघुवंश' के चतुर्थ सर्ग में कवि ने सीमावर्ती शक्तिशाली राज्यों का वर्णन किया है, जबकि छठें सर्ग में उत्तर भारत के मध्य भाग तथा दक्षिाण भारत के शासकों का समवेत वर्णन किया गया है।

इतिहासज्ञों का कहना है कि प्राचीनकाल में वंश देश तथा इसके पडोसी प्रदेश लंका, बर्मा, चीन, जावा तथा बाली द्वीपों के बीच सामुद्रिक व्यापार होता है। 'कुमारसम्भव' में 'संतानकाकीर्ण–महापथं तच्चीनाँशुकेः कल्पितकेतुकालम्' 'चीनाँशुकमिवकेतोः प्रतिवातं नीयमानस्य', तथा 'रघुवंश' के 17वें वर्ग के 81वें श्लोक में 'यादोनाथः शिवजलपथः कर्मणे नौचराणाम्'[1] आदि स्थल इस तथ्य का समर्थन करते है कि कालिदास के समय में भारत चीन तथा इसके पड़ोसी द्वीपसमूहों में अन्तर्राष्ट्रीय सामुद्रिक व्यापार भलीभाँति प्रचलित था। 'रघुवंश' के तेरहवें सर्ग के प्रथम तथा सत्रहवें श्लोकों में समुद्र का मनोहारी वर्णन किया गया है। वस्तुतः इसे सागरयात्रा का वर्णन कहना उपयुक्त होगा। 'रघुवंश' के छठें सर्ग के 57वें श्लोक में

'अनेन सार्धंविहराम्बुराशेस्तीरेषु तालीवनमर्मरेषु।
द्वीपवीपान्तरानीतलवंगपुष्पैरपाकृतस्वेदलवा मरूद्भिः'।।[2]

कथन गरम मसालों से भरे एक समृद्ध द्वीप का चित्र प्रस्तुत करता है। 'चीनांशुक' शब्द चीन देश से लाये गये उत्कृष्ट रेशमी वस्त्रों के व्यापार की पुष्टि करता है। चीनी यात्री फाह्यान वंग देश से परिचित था। उत्कल देश अथवा उड़ीसा का वर्णन भी कालिदास ने किया है। 'महाभारत' एवं कुछ सूत्रकारों ने इसे 'ओड्र' अथवा 'उड्र' नाम से भी पुकारा है। यह भी सागर के तट पर बसा एक प्राचीन राज्य था तथा व्यापार के लिए प्रसिद्ध था।

कालिदास ने कलिंग देश का वर्णन किया है। उनके वर्णन से ऐसा प्रतीत होता है कि यह देश उनके समय में एक शक्तिशाली देश था।

कालिदास ने भारत के उत्तरी–पश्चिमी भाग में अनेक पृथक् एवं स्वतंत्र राज्यों का उल्लेख किया है। 'रघुवंश' के चतुर्थ सर्ग के 60 वें श्लोक में उन्होंने 'पारसीको' का उल्लेख किया है। मार्ग में रघु ने यवनों को पराजित किया। उसके बाद रघु एवं पाश्चात्यों के मध्य हुए घमासान युद्ध का वर्णन किया गया है जिसमें रघु विजयी हुए। यहाँ 'पाश्चात्यों' का पारसीकों से ही तात्पर्य है।

'पाश्चात्य' शब्द पारसीकों का संकेत देता है, यवनों अथवा ग्रीकों का नहीं, क्योंकि कालिदास ने इन्हें कोई विशेष महत्व नहीं दिया है। पाँचवें सर्ग के 73वें[3] श्लोक में प्रयुक्त 'वनायु' शब्द से यह तथ्य समर्थित होता है, जहाँ 'वनायु' का अर्थ फारसी घोड़ों से है। 60वें श्लोक में रघु पारसीकों पर विजय प्राप्त करने हेतु प्रयाण करते हैं, 61वें श्लोक में उनके साथ यवनों से हुई मुठभेड़ का वर्णन है तथा 62वें श्लोक में पारसीकों से उनका युद्ध होता है।

कुछ विद्वानों के मतानुसार 'पाश्चात्य' शब्द का अर्थ 'पारसीक' अथवा 'ग्रीक' दोनों हो सकता है। किन्तु इस मत का समर्थन कालिदास के किसी भी टीकाकार ने नहीं किया है, अतएव स्वीकार्य नहीं है।

इसी प्रकार कालिदास ने प्राचीन राज्यों में मगध देश का नाम अत्यन्त आदर से लिया है। 'रघुवंश' के छठे सर्ग में स्वयंवर सभा में सुनन्दा इन्दुमति को सुदूर देशों से आये राज्याधिपों का परिचय देती है। मगध नरेश के वर्णन तथा इन्दुमती द्वारा उस राजा के प्रति नतमस्तक होकर आदर प्रदर्शित करने की शैली से यह विदित होता है कि मगध नरेश एक प्रभुत्व–सम्पन्न शासक था। मगध राज्य प्राचीन काल से ही विद्या, शौर्य एवं वाणिज्य का केन्द्र रहा है।

इसी प्रकार 'रघुवंश'[4] के छठे सर्ग के 37वें पद्य में सुनन्दा अनूपदेश के राजा का वर्णन करती है। यह देश मध्य प्रदेश के दक्षिणी भाग में स्थित रहा होगा, जिसके बीच से नर्मदा बहती है। कालिदास के समय में महिष्मति इस देश की राजधानी थी। यह राज्य 'महाभारत' के समय से ही एक प्राचीन राज्य था। कालिदास द्वारा किए गए अनूप देश के वर्णन से ऐसा प्रतीत होता है कि यह एक शक्तिशाली, स्वतंत्र एवं पृथक् राज्य था। 45वें पद्य में सुनन्दा इन्दुमती को शूरसेन देश के राजा के पास ले जाती है।[5] शूरसेन देश का उल्लेख 'रामायण' तथा 'महाभारत' में मिलता है। 'महाभारत' तथा पतंजलि ने इसे वत्सभूमि कहा है। यह शूरसेन ही वर्तमान बुन्देलखण्ड है। कालिदास के समय में यह देश काफी विस्तृत रहा होगा, जो वत्स देश को लिए हुए मगध तथा अवन्ती की सीमा को भी घेरे हुए था। गंगा, यमुना नदियों से पवित्र इस देश के उत्तर में उस समय मथुरा तथा दक्षिण पूर्व में कौशाम्बी नगर इसके प्रमुख नगर थे।

उद्देश्य

महाकवि कालिदास विश्व प्रसिद्ध नाटककार एवं कवि है उनके कृतियों के ऐतिहासिक पक्ष पर विचार करने के उद्देश्य से यह शोधपत्र लिखा गया है।

निष्कर्ष

इस प्रकार महाकवि कालिदास के महाकाव्यों में प्राप्त ऐतिहासिक ज्ञान से हमारा ऐतिहासिक लेखन समृद्ध होता है। काव्य के साथ–साथ एक विस्तृत इतिहास का ज्ञान भी सुधीजन को प्राप्त होता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. 17वां वर्ग 81वां श्लोक
2. 'रघुवंश' छठा सर्ग 57वां श्लोक
3. 'रघुवंश' पांचवां सर्ग 73वां श्लोक
4. 'रघुवंश' छठा सर्ग 37वां श्लोक
5. 'रघुवंश' 45वां श्लोक